INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

महात्मा गांधी के मानवतावादी सिद्धांत का चम्पारण सत्याग्रह में अभिनव प्रयोग : एक अवलोकन

– डॉ0 संजीव कुमार
अध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
संताल परगना महाविद्यालय,
दुमका, झारखण्ड।
E-mail: drsanjeevkumar197@gmail.com

महात्मा गांधी ने चम्पारण को भारत आते ही अपना कर्मक्षेत्र बनाया और लगभग 6 महीने तक इस जिले में रहकर न केवल किसानों को राष्ट्रीय चेतना से परिचित कराया बल्कि कई रचनात्मक कार्यों का सम्पादन कर नागरिकों को सामाजिक परिवर्तन का दृष्टिकोण भी दिया। महात्मा गांधी का चम्पारण आंदोलन मूलतः मानवतावादी सिद्धांतों पर आधारित था। यद्यपि नील की खेती को लेकर बिहार में चम्पारण सत्याग्रह प्रारंभ हुआ, किन्तु इसका प्रभाव सम्पूर्ण बिहार पर और अन्ततोगत्वा संपूर्ण देश पर पड़ा। चम्पारण के कर्मक्षेत्र बनने से गांधी के सत्याग्रह से सम्पूर्ण बिहार को प्रभावित होना ही था।

''गांधी जी के बिहार प्रवास के कारण बिहार के नागरिक भी उनके विचारों के सम्पर्क में आए। गांधी जी के चम्पारण सत्याग्रह के कारण ही चम्पारण भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में अद्वितीय महत्त्व का जिला बन गया। सत्य और अहिंसा को आधार बनाकर शोषण के विरूद्ध उन्होंने न केवल दलित जन–समूह में जागरण लाने का प्रयास किया, अपितु शोषण के विरूद्ध उन्हें अहिंसावादी संघर्ष के लिए उत्प्रेरित भी किया।''[1] चम्पारण सत्याग्रह के दरम्यान गांधी जी ने अपने सहकर्मियों को उच्च आदर्शों की कई प्रकार से अनुप्रेरणा दी। चम्पारण में इनके साथ काम करने वाले डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, श्री कृपलाणी तथा अन्य कई नेताओं ने उनकी प्रेरणा से शिक्षा लेकर बिहार के आन्दोलन का संचलान भार अपने कंधों पर उठाया। चम्पारण में इन सहकर्मियों को गांधी जी की छत्रछाया में महान नैतिक प्रशिक्षण दिया। देश के आगामी स्वतंत्रता संग्राम में नेता के रूप में प्रांत को नेतृत्व प्रदान करने हेतु यह प्रशिक्षण एवं अनुप्रेरणा उनके लिए नितांत उपयोगी सिद्ध हुआ। गांधी जी ने इन भावी नेताओं को जातिवाद एवं दलगत भावना से ऊपर उठने की शिक्षा दी। उन्होंने कार्यकर्ताओं को बताया कि जबतक वे सार्वजनिक कार्य में होंगे, उनकी ''एक ही जाति होगी – सहकर्मियों की जाति।''[2]

महात्मा गांधी ने राष्ट्र–भ्रमण के दौरान यह महसूस किया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता मुख्यतः शहरों तक अपनी कार्यवाही को सीमित किए हुए हैं। उनका मानना था कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जनता की कांग्रेस नहीं बन सकी है। चम्पारण सत्याग्रह के नेताओं को उन्होंने जनमत का महत्त्व बतलाया। उन्होंने बतलाया कि सफलता के लिए जनसमुदाय का सहयोग प्राप्त करना आवश्यक है। उन्होंने यह आदर्श उपस्थित किया कि जबतक देश की जनता को आंदोलन में साथ नहीं रखा जाएगा, उनका सहयोग नहीं पाया जाएगा तबतक आन्दोलन सफल नहीं हो सकता है। महात्मा गांधी ने चम्पारण सत्याग्रह के दरम्यान सुधार कार्यों को प्रारम्भ करके जनता से कांग्रेस को परिचित कराया और नेताओं को यह ज्ञान दिया कि उन्हें राष्ट्रीय संग्राम में सफल होने के लिए जनता का सहयोग प्राप्त करना होगा। राष्ट्रीय संघर्ष परवर्ती काल में जनता का पूर्ण सहयोग मिला ।

गांधी जी ने चम्पारण सत्याग्रह के समय ग्रामीण क्षेत्रों में समाज सेवा के जो प्रायोगिक काम किए थे, उससे आन्दोलन को गतिशील बनाये रखना संभव हुआ। सुधारों ने जनता की आँखें खोल दीं और सुयोग्य नागरिक बनकर उन्होंने आन्दोलन को सफल बनाने में अपना हाथ बँटाना प्रारम्भ किया, साथ ही भविष्य में सुधार आन्दोलन चलाने में उत्प्रेरक का काम किया। देश के नेताओं ने यह भी अनुभव किया कि स्वतंत्रता प्राप्ति जितनी आवश्यक है उससे कम आवश्यक समाज सुधार का काम नहीं है। गांधी जी इसी समय से जीवनपर्यन्त समाज सुधार के कार्य में भी लग गए और देश में व्याप्त जातिवाद को दूर करने के लिए, गंदगी के निवारण के लिए, शिक्षा के विकास के लिए तथा पीड़ितों के कष्ट को दूर करने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। उनका जीवन कार्य भी धाराओं में बँट गया। वे स्वतंत्रता आन्दोलन के नेतृत्त्वकर्ता भी बने और समाज सुधारक भी। गांधी जी ने शोषित पीड़ित जन–समूह की स्थिति में सुधार के माध्यम से स्वराज की जो भावना जगायी, यह वस्तुतः हमारे देश प्रेम का स्वर्णिम आदर्श था। गांधी जी ने इसकी जड़ सर्वप्रथम बिहार में डाला। यही हमारे समग्र सामाजिक गठन को सुदीर्घ विदेशी आधिपत्य के अन्तर्गत जिन बिमारियों को पकड़ रखा था उनसे मुक्त होने का एक मार्ग था।[3] तत्क्षण ही समाज सेवा की भावना बिहार के लोगों को अनुप्रेरणा देने लगी थी।

चम्पारण सत्याग्रह में राष्ट्रीय आन्दोलन में किसानों को एक महत्त्वपूर्ण अंग बना दिया। गांधी जी ने प्रत्यक्ष रूप से चम्पारण के किसानों के बीच कुछ महीनों तक अपना जीवन व्यतीत किया था और यह अनुभव किया था कि भारत के नेताओं और उनके जीवन का उद्देश्य होना चाहिए किसानों और खेतीहरों की स्थिति में परिवर्तन लाना। इसी समय से देश के किसान और मजदूर आर्थिक विचारधारा के केन्द्र बन गये। चम्पारण ने यह स्पष्ट कर दिया कि जबतक भारत के गांवों का निर्माण नहीं होगा, तबतक भारत का निर्माण और विकास संभव नहीं है। नगर केवल बाहरी तथा भीतरी धरातल के द्योतक हैं, इसलिए गांधी जी कृषि प्रधान सभ्यता के पोषक बने और वे खादी तथा ग्रामोद्योग को महत्त्व देने लगे। उनको साम्राज्यवाद का विरोध करने की भावना भी चम्पारण के रैयतों से ही मिली।[4] उन्होंने साम्राज्यवाद का विरोध इसलिए करना प्रारंभ किया, क्योंकि जातियों के शोषण और उपनिवेशों की दासता का वह प्रतीक था; श्रम को उन्होंने महत्त्व दिया और श्रम का उचित मुआवजा पाने का भी सिद्धांत दिया। उन्होंने श्रम की पवित्रता के नैतिक महत्त्व को भी इसी समय समझा और तब वे इस मत को दृढ़ता के साथ अपनाते रहे।[5] गांधी जी ने चम्पारण में देखा कि किसानों के श्रम का कोई मूल्य नहीं था। किसान नीलहों के लिए नील की खेती कठिन श्रम लगाकर करते थे और उनसे बेगारी ली जाती थी। गांधी जी कहा करते थे कि सबसे बड़ा न्याय यह है कि काम करने वाला ही भूखा रहता है। उन्होंने यह सिद्धांत बना डाला कि देश में श्रम का महत्त्व होना चाहिए और उत्पादन के उद्देश्य से श्रम लगाने वाला ही वास्तव में धन का अधिकारी होना चाहिए। ''गांधी जी ने अनुभव किया कि ब्रिटिश पूंजीवाद ने देहाती अर्थतंत्र के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया है, इसलिए ब्रिटीश सरकार को हटाकर इस खतरे को समाप्त करना है। चम्पारण में ही गांधी जी ने देखा कि भारत गांव में बसता है। इसलिए उन्होंने गांवों की ओर लौटो का नारा दिया था, नारा न तो काल्पनिक था और न ही प्रतिक्रियावादी। मार्क्सवादी भी स्वीकार करते हैं कि देहाती तथा शहरी क्षेत्रों के प्रति संतुलन स्थापित करना आवश्यक है। पश्चिम के कुछ समाज शास्त्रियों के भांति गांधी जी का भी कुछ विश्वास था कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ और समृद्ध होने से लोकतंत्र को नयी शक्ति और स्फूर्ति मिलेगी।''[6] चम्पारण सत्याग्रह ने गांधी जी के मस्तिष्क में इस क्रांतिकारी सिद्धांत का प्रतिपादन किया कि भूमि उसकी है, जो उसे जोतता है।[7] चम्पारण सत्याग्रह में ही गांधी जी को ग्रामोद्धार का बेड़ा उठाने की प्रेरणा दी। उन्होंने ग्रामीण जीवन की एकता और बुनियाद को सुरक्षित रखने का अथक प्रयत्न किया। चम्पारण के गांवों के विघटन और सर्वनाश को देखकर वे अत्यंत द्रवित हुए थे। उन्होंने अनुभव किया था कि भारत के तमाम गांवों में विघटन और सर्वनाश की यह प्रक्रिया

चालू है। 13 अक्टूबर 1921 के 'यंग इंडिया' में गांधी जी ने चम्पारण के गांव की विघटनकारी स्थिति को देखकर ही भारतीय गांवों के शोषण और कष्टों का उल्लेख करते हुए कहा था कि ''यह एक रक्त बहाने की प्रक्रिया है जो पिछले 200 वर्षों से चली आ रही है।'' ग्रामोद्धार के कार्यक्रम को राष्ट्र के नेताओं ने अपनाया, जिससे भारतीय राष्ट्रवाद के आंदोलन की जड़ सुदृढ़ होने वाली थी। अपने प्रारम्भिक काल से ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं ने समाज सुधार के लिए अधिवेशन के मंच से भाषण देना प्रारम्भ किया था और सरकार से अपील की थी कि समाज सुधार के लिए पहल करें, किन्तु गांधी के नेतृत्व में समाज सुधार का कार्यक्रम कांग्रेस के कार्यक्रम का एक प्रमुख हिस्सा बन गया। गांधी युग की यह एक प्रमुख विशेषता है।

चम्पारण सत्याग्रह के नेताओं और जनता को गांधी जी ने निर्भीकता का पाठ पढ़ाया। गांधी जी ने अन्याय का विरोध करना सत्य और अहिंसा का प्रथम गुण बतलाया। उन्होंने चम्पारण के गांव का दौरा करना प्रारम्भ किया तथा वहाँ के लोगों में अपने आप निर्भिकता की भावना आने लगी। जो किसान कभी नीलवरों के समक्ष मुँह खोलने की हिम्मत नहीं करते थे और उनके एक ईशारे पर उनके खेतों में कम मजदूरी लेकर काम करते थे और उनकी सवारी के लिए घोड़े और बैलगाड़ी की व्यवस्था कर देते थे, उन्हीं रैयतों ने उनके तथा सरकार के अधिकारियों की अनुपस्थिति में अपनी दुःख–गाथा गांधी जी के सामने उगल दी और नीलवरों के अत्याचारों को गिनाया। गांधी जी के पूर्व चम्पारण में रैयतों ने नीलवरों के खिलाफ हिंसक आंदोलन चलाए थे, लेकिन नीलहे जमीनदारों एवं ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधियों ने हिंसक तरीके से उनका दमन किया था। गांधी जी ने अहिंसा एवं सत्य के माध्यम से अहिंसक आंदोलन चलाकर नीलहे जमीनदार एवं सरकार को रैयतों को राहत देने के लिए विवश कर दिया। गांधी जी यह भली–भांति समझते थे कि हिंसक आन्दोलन होने की स्थिति में ब्रिटीशर्स आन्दोलन को शक्ति के बल पर दबा देंगे। यही वजह था कि उन्होंने पूर्व की नीतियों का अनुसरण न करते हुए अहिंसा और सत्य को आन्दोलन का मार्ग बनाया। सत्याग्रह की सफलता से किसान और सर्वसाधारण निर्भीक हो गए। चम्पारण की घटना समस्त देश में फैल गई और देश का दलित और पीड़ित वर्ग भी निर्भय हो उठा। किन्तु गांधी जी ने भी बतलाया कि अन्याय के विरूद्ध हथियार न उठाकर शान्तिपूर्वक हड़ताल करना चाहिए और आन्दोलन को सफल बनाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ होना चाहिए। चम्पारण सत्याग्रह के बाद अहमदाबाद के नील मजदूरों ने अहिंसक सत्याग्रह को अपनाया। आगे चलकर गांधी जी ने बम्बई महाप्रांत के खेड़ा गांव में सत्याग्रह आंदोलन प्रारम्भ किया और किसानों को राजस्व नहीं देने के लिए परामर्श दिया,[8] क्योंकि इस वर्ष यह क्षेत्र दुर्भिक्ष का शिकार था। किसानों को यहाँ भी सफलता मिली।[9] खेड़ा सत्याग्रह, चम्पारण सत्याग्रह की पुनरावृत्ति थी। अब यह स्पष्ट हो गया कि भारत सत्य एवं अहिंसा को अपना हथियार बनाकर स्वतंत्रता संग्राम को सफल बना सकता है।

इस प्रकार चम्पारण सत्याग्रह भारत का प्रथम सत्याग्रह होकर भी एक असाधारण सत्याग्रह था। यद्यपि इस सत्याग्रह का मुख्य उद्देश्य चम्पारण के किसानों की समस्या और उनके कष्ट का निदान करना था जो स्थानीय सरकार और कोठीवालों की शोषण नीति के कारण उत्पन्न हुई थी, किन्तु इस सत्याग्रह ने केवल चम्पारण के रैयतों और लोगों को ही मुक्ति नहीं दी, अपितु समस्त भारत को मानवता एवं राष्ट्रवाद का ज्ञान दिया। इस सत्याग्रह ने कांग्रेस को जनता के निकट ला दिया। कांग्रेस अभिजात्य वर्ग तक सीमित न होकर एक अखिल भारतीय राजनीतिक मंच बन गया, जो जनसाधारण के विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गया। गांधी जी ने आर्थिक शोषण के विरूद्ध सत्याग्रह करके और समाज सुधार के कार्य के महत्त्व को लोगों के बीच स्थापित किया। अतः आम जन कांग्रेस के प्रति आस्था रखने लगे। चम्पारण सत्याग्रह 60 वर्षों से उत्प्रेरित एवं दलित किसानों की पहली विजय का द्योतक है, साथ ही भारतीयों के स्वराज संग्राम में सफलता प्राप्ति की अग्रिम सूचना भी है। चम्पारण सत्याग्रह के साथ ही भारत में मानववादी दृष्टिकोण को बढ़ावा मिला और राष्ट्रीय आन्दोलन में एक नवीन अध्याय तथा भारत के जीवन में एक अभूतपूर्व युग का प्रादुर्भाव हुआ।

————————

संदर्भ :–

[1] आर. सन्यालिंगम, इण्डियन नेशनलिज्म : ए हिस्टोरिकल एनेलायसिस, पृ०–244
[2] राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गांधी एण्ड बिहार, पृ०–26
[3] के.के. दत्त, बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ०–298
[4] हरिजन, 25 मार्च 1939
[5] हरिजन, जनवरी 1947
[6] यंग इंडिया, 1931
[7] हरिजन, 31 मार्च 1946
[8] बी.एम. टांक : नन–को–ऑपरेशन इन इण्डियन पॉलिटिक्स, पृ०–17
[9] वही, पृ०–324

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM